Volume: 5 Issue: 5 Pages: 184-188

छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध, संघर्ष और बलिदान का सौंदर्यशास्त्र

[*1] चन्द्रहास

[*1] पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 26/April/2026
Accepted: 21/May/2026

***Corresponding Author**
चन्द्रहास
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
छत्तीसगढ़ी काव्य परंपरा हमारे लोकसाहित्य का एक बहुत समृद्ध और जीवंत हिस्सा है, जिसमें वीरता, संघर्ष और बलिदान की बातें गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह शोध इस बात को समझने की कोशिश करता है कि छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध, संघर्ष और बलिदान को किस तरह सुंदर और प्रभावशाली तरीके से दिखाया गया है। इससे पता चलता है कि लोककाव्य और आज की छत्तीसगढ़ी कविताएँ सिर्फ इतिहास या समाज के संघर्षों की कहानी नहीं बतातीं, बल्कि उनमें भावनाएँ, संस्कृति और जीवन के अनुभव भी साफ दिखाई देते हैं। इन कविताओं में वीर रस के साथ-साथ करुण और अद्भुत भाव भी मिलते हैं, जो इंसान की भावनाओं को गहराई से छूते हैं। छत्तीसगढ़ी काव्य में युद्ध सिर्फ लड़ाई नहीं है, बल्कि यह सही काम के लिए खड़े होने और अपने कर्तव्य को निभाने का प्रतीक है। संघर्ष समाज में बदलाव लाने की इच्छा को दिखाता है, और बलिदान त्याग और आदर्श की भावना को सामने लाता है। यह शोध यह भी बताता है कि ऐसी कविताएँ समाज की यादों को संभालकर रखती हैं, लोकनायकों को सम्मान देती हैं और लोगों में अपनी पहचान और गर्व की भावना पैदा करती हैं। इसलिए छत्तीसगढ़ी काव्य सिर्फ साहित्य नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति को समझने का एक मजबूत माध्यम भी है।

मुख्य शब्द: छत्तीसगढ़ी काव्य, वीर रस, संघर्ष, बलिदान, सौंदर्यशास्त्र, लोककाव्य, पंडवानी, लोकनायक, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान, लोकपरंपरा, समकालीन परिप्रेक्ष्य

1. प्रस्तावना:

भारतीय काव्य परंपरा में रस सिद्धांत का बहुत महत्व है, और उसमें 'वीर रस' को खास जगह दी गई है। छत्तीसगढ़ी काव्य इस मामले में काफी समृद्ध है, क्योंकि यहाँ के लोगों के जीवन में मेहनत, संघर्ष, साहस और बलिदान की कई कहानियाँ देखने को मिलती हैं। इतिहास में भी यह क्षेत्र कई आंदोलनों और विरोधों का हिस्सा रहा है, जिसका असर यहाँ के साहित्य पर साफ दिखाई देता है। छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध, संघर्ष और बलिदान सिर्फ घटनाओं का वर्णन नहीं होते, बल्कि उन्हें एक भावनात्मक और सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। इन कविताओं में वीरता केवल ताकत दिखाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसमें सही-गलत की समझ, त्याग, जिम्मेदारी और समाज के प्रति जागरूकता भी शामिल होती है। इस शोध में यह समझने की कोशिश की जाएगी कि छत्तीसगढ़ी कविताएँ इन विषयों को किस तरह से प्रभावशाली ढंग से पेश करती हैं और इन्हें पढ़कर या सुनकर लोगों के मन में किस तरह की भावनाएँ पैदा होती हैं। कुल मिलाकर, ये कविताएँ न सिर्फ मनोरंजन करती हैं, बल्कि लोगों को सोचने और प्रेरित होने के लिए भी मजबूर करती हैं।

"धरती मइया के खातिर, सिर दे देबो हँस के,
माटी के मान बचाना, हमर पहिली कसमें।" [1]

2. छत्तीसगढ़ी काव्य की परंपरा और स्वरूप

छत्तीसगढ़ी काव्य मुख्यतः दो रूपों में विकसित हुआ है- एक लोककाव्य (जो लोग गाते-सुनाते आए हैं) और दूसरा आधुनिक लिखित काव्य। लोककाव्य में पंडवानी, भरथरी, चंदैनी और अलग-अलग लोकगाथाएँ आती हैं। इन सबमें वीरता, संघर्ष और जीवन की सच्ची कहानियाँ बहुत ही सहज ढंग से सुनाई जाती हैं। गाँव-गाँव में जब पंडवानी गाई जाती है, तो लगता है जैसे महाभारत की पूरी कहानी हमारे सामने जिंदा हो गई हो—भीम का साहस, अर्जुन का पराक्रम, और युद्ध के दृश्य इतने जीवंत होते हैं कि सुनने वाला खुद को उसी समय में महसूस करने लगता है। उसी तरह लोकगाथाओं में हमारे अपने क्षेत्र के नायकों की कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं, जो लोगों के दिल में गर्व और हिम्मत पैदा करती हैं। जिसे हम रामनारायण शुक्ल की इन पंक्तियों से समझ सकतें है-

"अर्जुन धनुष उठाइस, रण म घनघोर गूंज,
धरती कांपे पांव तले, वीरता के परत धूंज।" [2]

इन पंक्तियों में युद्ध का दृश्य बहुत ही जीवंत तरीके से सामने आता है। "धनुष उठाइस" और "घनघोर गूंज" जैसे शब्द वीरता और युद्ध के माहौल को मजबूत बनाते हैं। वहीं "धरती कांपे पांव तले" यह दिखाता है कि नायक का साहस इतना बड़ा है कि उसका प्रभाव पूरी प्रकृति तक महसूस होता है। "वीरता के परत धूंज" से यह समझ आता है कि युद्ध सिर्फ लड़ाई नहीं, बल्कि साहस और सम्मान का प्रतीक है। अब अगर आधुनिक छत्तीसगढ़ी कविता को देखें, तो वहाँ भी यही परंपरा जारी है, लेकिन विषय थोड़े बदल गए हैं। अब कवि केवल युद्ध या पुरानी वीरता की बातें नहीं करते, बल्कि आज के समाज में हो रहे अन्याय, शोषण और संघर्ष को भी उठाते हैं। वे इन मुद्दों को इस तरह लिखते हैं कि पढ़ने वाला सिर्फ समझे ही नहीं, बल्कि महसूस भी करे।

3. युद्ध का सौंदर्यशास्त्र

छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध का चित्रण केवल हिंसा और विनाश के रूप में नहीं किया गया है, बल्कि उसमें एक विशेष प्रकार की सुंदरता और गहराई भी दिखाई देती है। कवि युद्ध को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि उसमें साहस, भावना और आदर्श तीनों एक साथ नजर आते हैं। यह सौंदर्यशास्त्र मुख्य रूप से तीन स्तरों पर समझा जा सकता है –

(क) दृश्यात्मक सौंदर्य

युद्ध के दृश्य इतने जीवंत तरीके से बताए जाते हैं कि सुनने या पढ़ने वाला खुद को रणभूमि में महसूस करने लगता है। तलवारों की चमक, घोड़ों की दौड़, नगाड़ों की आवाज और योद्धाओं का जोश—सब कुछ आँखों के सामने आ जाता है।

"चमके तलवार बिहान जइसे, रण म उठे ललकार,
धुर्रा उड़े मैदान भर, गूंजे जय-जयकार।" [3]

इस पंक्ति में युद्ध का दृश्य अत्यंत सजीव और प्रभावशाली ढंग से उभरकर सामने आता है। "चमके तलवार बिहान जइसे" में तलवार की चमक की तुलना सुबह की रोशनी से की गई है, जो युद्ध को एक ऊर्जावान और तेजस्वी रूप देती है। "रण म उठे ललकार" वीरता और चुनौती की भावना को प्रकट करता है। वहीं "धुर्रा उड़े मैदान भर" से युद्ध की गति और हलचल का चित्र सामने आता है, और "गूंजे जय-जयकार" सामूहिक उत्साह और विजय की भावना को दर्शाता है। इस प्रकार, पूरी पंक्ति दृश्यात्मक और भावात्मक दोनों स्तरों पर युद्ध के सौंदर्य को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती है।

(ख) भावात्मक सौंदर्य

युद्ध में केवल लड़ाई नहीं होती, बल्कि कई तरह की भावनाएँ होती हैं- जैसे हिम्मत, गुस्सा, डर और जोश। कवि इन भावनाओं को संतुलित तरीके से दिखाते हैं। वीर रस मुख्य होता है, लेकिन करुण भाव भी साथ चलता है। जिसे इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है-

"आंख म आग, दिल म जोश, कदम बढ़े बिना डरे,
मोर संगवारी गिरगे जब, आँसू भीतर ही झरे।" [4]

इस पंक्ति में युद्ध का दृश्य अत्यंत सजीव और प्रभावशाली ढंग से उभरकर सामने आता है। "चमके तलवार बिहान जइसे" में तलवार की चमक की तुलना सुबह की रोशनी से की गई है, जो युद्ध को एक ऊर्जावान और तेजस्वी रूप देती है। "रण म उठे ललकार" वीरता और चुनौती की भावना को प्रकट करता है। वहीं "धुर्रा उड़े मैदान भर" से युद्ध की गति और हलचल का चित्र सामने आता है, और "गूंजे जय-जयकार" सामूहिक उत्साह और विजय की भावना को दर्शाता है। इस प्रकार, पूरी पंक्ति दृश्यात्मक और भावात्मक दोनों स्तरों पर युद्ध के सौंदर्य को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती है।

(ग) नैतिक सौंदर्य

छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध को केवल ताकत दिखाने के लिए नहीं, बल्कि सही काम और न्याय के लिए लड़ा गया बताया जाता है। इसमें कर्तव्य, ईमानदारी और समाज के लिए कुछ करने की भावना होती है।

"माटी के लाज बचाय बर, खड़े रइथे सीना तान,
अन्याय के आगू झुके नइ, येच वीरन के पहचान।" [5]

इस पंक्ति में वीरता को नैतिकता और आत्मसम्मान से जोड़ा गया है। "माटी के लाज बचाय बर" मातृभूमि के सम्मान की रक्षा की भावना को सामने लाता है, जो युद्ध को एक उच्च उद्देश्य से जोड़ता है। "सीना तान" आत्मविश्वास और निर्भीकता का प्रतीक है। "अन्याय के आगू झुके नइ" यह स्पष्ट करता है कि सच्चा वीर वही है जो गलत के सामने कभी झुकता नहीं। यहाँ युद्ध को केवल लड़ाई नहीं, बल्कि सही के लिए खड़े होने और अपने सिद्धांतों को निभाने का माध्यम बताया गया है।

4. संघर्ष का सौंदर्यशास्त्र

छत्तीसगढ़ी जीवन में संघर्ष एक सामान्य और जरूरी हिस्सा है, और यही बात यहाँ के काव्य में भी साफ दिखाई देती है। इन कविताओं में संघर्ष को केवल दुख या कठिनाई के रूप में नहीं, बल्कि ताकत और उम्मीद के रूप में दिखाया गया है। किसान की मेहनत, मजदूर का संघर्ष, और आम आदमी का जीवन से लड़ना—ये सभी विषय कविताओं में सहज रूप से आते हैं।कवि इन संघर्षों को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि पाठक केवल समझे ही नहीं, बल्कि उन्हें महसूस भी करे। यहाँ संघर्ष बाहरी ही नहीं, बल्कि अंदरूनी भी होता है, जैसे डर, निराशा और असफलता से लड़ना। साथ ही, समाज में हो रहे अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाना भी एक महत्वपूर्ण संघर्ष के रूप में सामने आता है। इस तरह छत्तीसगढ़ी काव्य में संघर्ष केवल कठिनाई नहीं, बल्कि आगे बढ़ने की प्रेरणा और बदलाव की उम्मीद का प्रतीक बन जाता है।

(क) सामाजिक संघर्ष

छत्तीसगढ़ी काव्य में सामाजिक संघर्ष एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में सामने आता है। यहाँ कवि जाति, वर्ग और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाते हैं। समाज में जो लोग कमजोर और पिछड़े हैं, उनके दुख-दर्द और संघर्ष को कविताओं में प्रमुखता से जगह दी जाती है। यह संघर्ष केवल विरोध करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि एक बेहतर और बराबरी वाले समाज की इच्छा को भी दिखाता है। कविताओं में अक्सर यह बताया जाता है कि किस तरह गरीब और शोषित लोग कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानते, बल्कि अपने हक के लिए डटे रहते हैं। यह संघर्ष समाज में बदलाव लाने की ताकत बनता है और लोगों को जागरूक करता है। इस तरह छत्तीसगढ़ी काव्य सामाजिक न्याय, समानता और अधिकारों की भावना को मजबूत करता है।

"अमीर-गरीब के बीच म, खिंच गे रेखा भारी,
हक बर लड़े गरीब मन, अब नई सहन करन लाचारी।" [6]

इस पंक्ति में समाज की असमानता को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। "रेखा भारी" शब्द अमीर और गरीब के बीच की गहरी दूरी को दर्शाता है। वहीं "हक बर लड़े गरीब मन" यह बताता है कि अब शोषित वर्ग अपने अधिकारों के लिए जागरूक हो चुका है और संघर्ष कर रहा है। "नई सहन करन लाचारी" से यह संकेत मिलता है कि अब लोग अन्याय को चुपचाप सहने के बजाय उसके खिलाफ खड़े हो रहे हैं। इस प्रकार यह पंक्ति सामाजिक संघर्ष को केवल समस्या नहीं, बल्कि बदलाव की दिशा में एक सकारात्मक कदम के रूप में प्रस्तुत करती है।

(ख) व्यक्तिगत संघर्ष

छत्तीसगढ़ी काव्य में व्यक्तिगत संघर्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सामाजिक संघर्ष। यहाँ कवि इंसान के भीतर चल रहे मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व को बहुत संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करते हैं। कई बार व्यक्ति बाहर से मजबूत दिखता है, लेकिन भीतर डर, दुख, असफलता और उम्मीद के बीच लगातार संघर्ष करता रहता है। यह अंदरूनी लड़ाई ही उसे आगे बढ़ने की ताकत देती है। कविताओं में ऐसे पात्र दिखाई देते हैं जो अपनी परिस्थितियों से टूटते नहीं, बल्कि उनसे सीखकर और मजबूत बनते हैं। यह संघर्ष आत्मविश्वास, धैर्य और जीवन के प्रति सकारात्मक सोच को जन्म देता है। छत्तीसगढ़ी काव्य इस आंतरिक संघर्ष को बहुत सहज भाषा में व्यक्त करता है, जिससे पाठक खुद को उससे जोड़ पाता है और प्रेरणा लेता है।

"मन म उठे हजार सवाल, हिम्मत नइ दे हार,
अंदर के लड़े लड़ई ले, बनथे जीवन के आधार।" [7]

इस पंक्ति में व्यक्ति के भीतर चल रहे मानसिक संघर्ष को दर्शाया गया है। "मन म उठे हजार सवाल" से असमंजस और चिंता की स्थिति सामने आती है, जबकि "हिम्मत नइ दे हार" से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति हार मानने के बजाय डटा रहता है। "अंदर के लड़े लड़ई" आत्मसंघर्ष को दिखाता है, जो बाहरी संघर्ष से भी अधिक कठिन होता है। अंत में "जीवन के आधार" यह बताता है कि यही संघर्ष व्यक्ति के विकास और सफलता की नींव बनता है। इस प्रकार, यह पंक्ति व्यक्तिगत संघर्ष को सकारात्मक और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत करती है।

(ग) प्रकृति से संघर्ष

छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान क्षेत्र है, इसलिए यहाँ के लोगों का जीवन प्रकृति पर बहुत हद तक निर्भर करता है। इसी कारण प्रकृति से संघर्ष छत्तीसगढ़ी काव्य का एक महत्वपूर्ण विषय बन जाता है। कभी सूखा, कभी अधिक बारिश, तो कभी फसल का खराब हो जाना—ये सभी परिस्थितियाँ किसान के जीवन में लगातार चुनौती बनकर आती हैं।कविताओं में इन कठिनाइयों को केवल दुख के रूप में नहीं, बल्कि मेहनत, धैर्य और उम्मीद के रूप में भी दिखाया जाता है। किसान हर बार हारने के बाद भी नई उम्मीद के साथ खेत में उतरता है। यह संघर्ष प्रकृति के साथ लड़ाई नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल बैठाने की कोशिश भी है।इस प्रकार छत्तीसगढ़ी काव्य में प्रकृति से संघर्ष जीवन की सच्चाई को दर्शाते हुए भी एक सकारात्मक दृष्टिकोण और जिजीविषा को सामने लाता है।

"घाम-बरसात संग जूझत, किसान धर ले आस,
माटी म पसीना बोके, उगथे जीवन के विश्वास।" [8]

इस पंक्ति में किसान के जीवन और प्रकृति से उसके संघर्ष को दर्शाया गया है। "घाम-बरसात संग जूझत" से यह स्पष्ट होता है कि किसान हर मौसम की कठिनाइयों का सामना करता है। "धर ले आस" उम्मीद और धैर्य को दिखाता है, जो उसे आगे बढ़ने की ताकत देता है। "माटी म पसीना बोके" मेहनत और समर्पण का प्रतीक है, जबकि "उगथे जीवन के विश्वास" यह बताता है कि इसी संघर्ष से जीवन में आशा और विश्वास जन्म लेते हैं। इस प्रकार यह पंक्ति प्रकृति से संघर्ष को सकारात्मक और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत करती है।

5. बलिदान का सौंदर्यशास्त्र

छत्तीसगढ़ी काव्य में बलिदान का सौंदर्यशास्त्र अत्यंत गहरा और भावनात्मक रूप में प्रस्तुत होता है। यहाँ बलिदान केवल किसी के प्राण त्याग देने की घटना नहीं है, बल्कि यह त्याग, कर्तव्य, निष्ठा और आदर्शों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। लोककाव्य और आधुनिक कविताओं में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं, जहाँ नायक अपने व्यक्तिगत सुख-दुख से ऊपर उठकर समाज, संस्कृति और मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देता है।इन कविताओं में बलिदान को एक ऊँचे आदर्श के रूप में स्थापित किया जाता है, जिससे श्रोताओं और पाठकों के मन में प्रेरणा और सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। यह केवल वीरता का प्रतीक नहीं होता, बल्कि इसमें करुणा, संवेदना और मानवीय रिश्तों की गहराई भी जुड़ी होती है। जब कोई नायक बलिदान देता है, तो उसके साथ जुड़े लोगों का दुख, विरह और स्मृति भी काव्य का हिस्सा बन जाते हैं, जिससे भावात्मक प्रभाव और अधिक गहरा हो जाता है।छत्तीसगढ़ी काव्य में बलिदान व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों रूपों में दिखाई देता है। कहीं एक व्यक्ति अपने आदर्शों के लिए त्याग करता है, तो कहीं पूरा समुदाय किसी बड़े उद्देश्य के लिए खड़ा होता है। इस प्रकार बलिदान केवल घटना नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक मूल्य बन जाता है, जो समाज को एकता, साहस और कर्तव्य की दिशा में प्रेरित करता है।

(क) आत्मबलिदान

छत्तीसगढ़ी काव्य में आत्मबलिदान एक बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक विषय है। इसमें नायक अपने समाज, संस्कृति और देश के लिए अपने प्राणों तक का त्याग कर देता है। यह बलिदान केवल एक घटना नहीं होता, बल्कि इसे आदर्श और महान कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कविताओं में ऐसे नायक दिखाए जाते हैं जो अपने व्यक्तिगत सुख-दुख से ऊपर उठकर समाज के हित को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार का त्याग लोगों में साहस, देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा की भावना पैदा करता है। छत्तीसगढ़ी काव्य आत्मबलिदान को बहुत सरल और प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त करता है, जिससे यह पाठकों के मन में गहरा प्रभाव छोड़ता है और उन्हें प्रेरित करता है कि वे भी समाज के लिए कुछ करने की भावना रखें।

"माटी बर दे देहूँ प्रान, हँसत-हँसत बलिदान,
जनम सफल हो जाथे, रख देथें देश के मान।" [9]

इस पंक्ति में आत्मबलिदान की भावना को बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। "माटी बर दे देहूँ प्रान" मातृभूमि के लिए प्राण त्यागने की सर्वोच्च भावना को दर्शाता है। "हँसत-हँसत बलिदान" यह बताता है कि नायक अपने कर्तव्य को खुशी-खुशी निभाता है, उसे किसी प्रकार का दुख नहीं होता। "जनम सफल हो जाथे" से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे बलिदान को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि माना गया है। इस प्रकार यह पंक्ति आत्मबलिदान को आदर्श, गौरव और प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करती है।

(ख) सामूहिक बलिदान

छत्तीसगढ़ी काव्य में सामूहिक बलिदान का चित्रण यह दिखाता है कि कई बार पूरा समुदाय किसी बड़े उद्देश्य के लिए एक साथ खड़ा होता

है। यह केवल एक व्यक्ति का त्याग नहीं, बल्कि समाज के लोगों की साझा भावना और एकजुटता का प्रतीक होता है। जब गाँव, समाज या समूह अपने अधिकारों, सम्मान या स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मिलकर संघर्ष करता है, तो वह सामूहिक बलिदान कहलाता है। कविताओं में ऐसे प्रसंग मिलते हैं जहाँ लोग अपने निजी स्वार्थों को छोड़कर सामूहिक हित के लिए त्याग करते हैं। यह भावना समाज में एकता, सहयोग और भाईचारे को मजबूत बनाती है। छत्तीसगढ़ी काव्य इस तरह के बलिदान को आदर्श रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे लोगों में सामूहिक चेतना और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

"गांव के मान बचाय बर, सबे संग होगे एक,
जान घलो दे डारिन, नई टूटे हिम्मत के टेक।" [10]

इस पंक्ति में सामूहिक बलिदान की भावना को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। "सबे संग होगे एक" समाज की एकता और एकजुटता को दर्शाता है, जहाँ सभी लोग मिलकर एक उद्देश्य के लिए खड़े होते हैं। "जान घलो दे डारिन" त्याग की पराकाष्ठा को व्यक्त करता है, जबकि "नई टूटे हिम्मत के टेक" यह बताता है कि कठिन परिस्थितियों में भी लोगों की हिम्मत नहीं टूटती। इस प्रकार यह पंक्ति यह दर्शाती है कि सामूहिक बलिदान केवल त्याग नहीं, बल्कि सामाजिक शक्ति और एकता का प्रतीक है।

(ग) करुण और वीर रस का समन्वय

छत्तीसगढ़ी काव्य में बलिदान के प्रसंगों में करुण और वीर रस का सुंदर मेल दिखाई देता है। एक तरफ वीरता, साहस और कर्तव्य निभाने की भावना होती है, तो दूसरी तरफ अपने लोगों से बिछड़ने का दुख, दर्द और संवेदना भी जुड़ी रहती है। यही कारण है कि ये कविताएँ केवल प्रेरणा ही नहीं देतीं, बल्कि मन को भावुक भी कर देती हैं। कवि इस तरह से चित्रण करते हैं कि नायक की वीरता पर गर्व भी होता है और उसके बलिदान पर मन में करुणा भी जागती है। यह मिश्रण काव्य को और गहराई देता है, जिससे पाठक या श्रोता दोनों भावों को एक साथ अनुभव करता है। इस तरह छत्तीसगढ़ी काव्य में बलिदान केवल वीरता का प्रतीक नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की गहराई को भी दर्शाता है।

"हँसत-हँसत गइस रण म, आँख म भरगे नीर,
जियत रही याद ओखर, बनगे अमर वो वीर।" [11]

इस पंक्ति में करुण और वीर रस का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। "हँसत-हँसत गइस रण म" वीरता और साहस को दर्शाता है, जहाँ नायक बिना डर के युद्ध में जाता है। वहीं "आँख म भरगे नीर" से उसके जाने का दुख और भावनात्मक पक्ष सामने आता है। "जियत रही याद ओखर" यह बताता है कि नायक भले ही चला गया हो, लेकिन उसकी स्मृति जीवित रहती है। इस प्रकार यह पंक्ति वीरता के साथ-साथ करुणा को भी प्रस्तुत करती है, जो काव्य को अधिक प्रभावशाली बनाती है।

6. लोकनायक और उनकी भूमिका

छत्तीसगढ़ी काव्य में लोकनायकों का विशेष महत्व होता है। ये केवल इतिहास के पात्र नहीं, बल्कि समाज के आदर्श और प्रेरणा के स्रोत होते हैं। उनके जीवन में साहस, संघर्ष और बलिदान की घटनाएँ होती हैं, जिन्हें कवि सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। लोकनायक आम लोगों के बीच से ही निकलते हैं, इसलिए उनकी कहानियाँ लोगों को अपने जीवन से जुड़ी हुई लगती हैं। कविताओं में इन नायकों को इस तरह दिखाया जाता है कि वे अन्याय के खिलाफ खड़े होते हैं, समाज की रक्षा करते हैं और अपने कर्तव्य को सबसे ऊपर रखते हैं। उनके कार्य लोगों में हिम्मत, एकता और जागरूकता पैदा करते हैं। इस प्रकार लोकनायक केवल अतीत की याद नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा बन जाते हैं।

"माटी के लाल उठे जब, बदल गे समय के चाल,
वीरन के गाथा गूंजे, देथें जनमन ला हिम्मत बेहाल।" [12]

इस पंक्ति में लोकनायक की भूमिका को प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है। "माटी के लाल" शब्द यह बताता है कि ये नायक इसी धरती से जुड़े आम लोग हैं। "बदल गे समय के चाल" से यह स्पष्ट होता है कि उनके कार्य समाज में परिवर्तन लाते हैं। "गाथा गूंजे" यह दर्शाता है कि उनकी वीरता की कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं। "जनमन ला हिम्मत" से यह समझ आता है कि ये नायक लोगों को साहस और प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार यह पंक्ति लोकनायकों को सामाजिक चेतना और प्रेरणा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है।

7. भाषा और शैली का योगदान

छत्तीसगढ़ी काव्य में भाषा और शैली का बहुत बड़ा योगदान है, जो उसकी सुंदरता और प्रभाव को और बढ़ा देता है। छत्तीसगढ़ी भाषा अपनी सरलता और सहजता के लिए जानी जाती है, इसलिए यह आम लोगों के दिल तक सीधे पहुँचती है। इसमें कठिन और जटिल शब्दों के बजाय रोजमर्रा की बोली का प्रयोग होता है, जिससे पाठक या श्रोता आसानी से अर्थ समझ पाते हैं और भावों से जुड़ जाते हैं।इसके साथ ही, छत्तीसगढ़ी काव्य की लयात्मकता (rhythm) भी बहुत खास होती है। लोकगीतों और पंडवानी जैसी परंपराओं में यह लय और ताल श्रोताओं को आकर्षित करती है और उन्हें लंबे समय तक याद रहती है। यही कारण है कि ये कविताएँ केवल पढ़ी ही नहीं जातीं, बल्कि गाई और सुनाई भी जाती हैं।लोकधर्मी शैली इन काव्यों को और जीवंत बना देती है। इसमें लोकजीवन, परंपराएँ, रीति-रिवाज और आम लोगों के अनुभव सीधे तौर पर झलकते हैं। इस कारण काव्य में अपनापन महसूस होता है। इस प्रकार, छत्तीसगढ़ी भाषा की सरलता, लय और लोक शैली मिलकर काव्य को प्रभावशाली, भावपूर्ण और यादगार बनाती हैं, जो श्रोताओं के मन में गहरा प्रभाव छोड़ती हैं।

8. सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ

छत्तीसगढ़ी कविताओं में सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ बहुत गहराई से जुड़े हुए होते हैं। इन कविताओं में यहाँ की लोकपरंपराएँ, रीति-रिवाज, त्योहार, मान्यताएँ और सामाजिक संरचना साफ दिखाई देती है। युद्ध, संघर्ष और बलिदान जैसे प्रसंग केवल घटनाएँ नहीं होते, बल्कि वे समाज की सामूहिक सोच, संस्कृति और जीवन मूल्यों से जुड़े होते हैं। प्रसिद्ध विद्वान रामचंद्र शुक्ल का मानना है कि "साहित्य समाज का दर्पण होता है, जिसमें उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ स्पष्ट झलकती हैं।" [13] इससे स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ी काव्य में भी समाज का वास्तविक रूप देखने को मिलता है। जो इन पंक्तियों में समाहित है-

"जऊन घर-गांव म गूंजे गाथा, ओतके जिंदा रहय इतिहास,
माटी, बोली, रीत-रिवाज, सब्बो बनथे कविता के आस।" [14]

इसी तरह हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि "लोकसाहित्य किसी भी समाज की जीवित परंपरा और उसकी आत्मा का सच्चा प्रतिनिधित्व करता है।" [15] यह कथन छत्तीसगढ़ी लोककाव्य पर पूरी तरह लागू होता है, जहाँ लोकजीवन की झलक मिलती है। जो इन पंक्तियों में समाहित है-

"राजा भर्तरी त्याग दीस राज-पाट के माया,
जोगी बन जंगल फिरिस, खोजत जीवन के छाया।" [16]

वहीं नामवर सिंह के अनुसार, "साहित्य में सामाजिक संदर्भ उसकी अर्थवत्ता और प्रभाव को निर्धारित करते हैं।" [17] इससे यह समझ आता है कि छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध, संघर्ष और बलिदान की घटनाएँ तभी प्रभावशाली बनती हैं, जब वे समाज और संस्कृति से जुड़ी होती हैं। जो इन पंक्तियों में समाहित है-

"जऊन-जऊन देखे हावं, ओही-ओही गाथा गावत हावं,
लोक के दुख-सुख ला, गीत म बुनत हावं।" [18]

9. समकालीन परिप्रेक्ष्य

आधुनिक समय में भी छत्तीसगढ़ी कवि युद्ध, संघर्ष और बलिदान जैसे विषयों को नए संदर्भों में प्रस्तुत कर रहे हैं। अब संघर्ष केवल युद्ध या शारीरिक लड़ाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार और समानता जैसे मुद्दों तक फैल गया है। आज का कवि समाज में हो रहे अन्याय, शोषण, विस्थापन और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के खिलाफ अपनी आवाज उठाता है।छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध लोकसाहित्य विशेषज्ञ रामप्रसाद साहू के अनुसार, "छत्तीसगढ़ी लोककाव्य सदैव जनजीवन के संघर्ष और परिवर्तनों को अभिव्यक्त करता रहा है।" [19] यह कथन बताता है कि यहाँ का काव्य समय के साथ बदलते सामाजिक संदर्भों को अपनाता रहा है। इसी तरह शिवकुमार मिश्र का मत है कि "लोकजीवन और प्रकृति के साथ जुड़े संघर्ष छत्तीसगढ़ी साहित्य की मूल संवेदना हैं।" [20] इससे स्पष्ट होता है कि आज भी कवि अपने आसपास के सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों को केंद्र में रखकर रचना कर रहे हैं।

"अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार,
इंद्रावती ह पखारय तोर पइयां।" [21]

निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ी कविताओं में युद्ध, संघर्ष और बलिदान का सौंदर्यशास्त्र एक व्यापक और बहुआयामी स्वरूप में सामने आता है। यह केवल वीरता का गुणगान करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसके माध्यम से मानवीय संवेदनाएँ, नैतिक मूल्य, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पहचान भी गहराई से अभिव्यक्त होती हैं। इन काव्यों में सौंदर्य केवल भाषा या शब्दों की सजावट में नहीं, बल्कि भावों की गहराई, विचारों की स्पष्टता और आदर्शों की ऊँचाई में निहित होता है।यह भी स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ी काव्य लोकजीवन के अनुभवों से जुड़ा हुआ है, जहाँ संघर्ष जीवन की सच्चाई है और बलिदान एक आदर्श के रूप में स्थापित होता है। युद्ध का चित्रण यहाँ केवल पराक्रम नहीं, बल्कि कर्तव्य और न्याय की रक्षा का प्रतीक बनकर उभरता है।अतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध और महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक निर्माण में भी एक सशक्त भूमिका निभाता है। यह काव्य परंपरा आज भी लोगों को प्रेरित करने, जागरूक करने और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य कर रही है।

संदर्भ सूची:

1. वर्मा, श्यामलाल (2012): छत्तीसगढ़ी लोककाव्य और संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 78।
2. शुक्ल, रामनारायण (2008): छत्तीसगढ़ी पंडवानी परंपरा, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 112।
3. शुक्ल, रामनारायण (2008): छत्तीसगढ़ी लोककाव्य परंपरा, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 142।
4. शुक्ल, रामनारायण (2008): छत्तीसगढ़ी लोककाव्य परंपरा, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 82।
5. दुबे, शंकरलाल (2015): छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य के आयाम, अंश प्रकाशन, पृष्ठ 64।
6. साहू, रामप्रसाद (2014): छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य: स्वरूप और विकास, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 132।
7. यादव, देवेंद्र (2016): छत्तीसगढ़ी कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 89।
8. मिश्रा, शिवकुमार (2013): छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और साहित्य, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 147।
9. साहू, रामप्रसाद (2014): छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य: स्वरूप और विकास, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 156।
10. मिश्रा, शिवकुमार (2013): छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और साहित्य, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 162।
11. यादव, देवेंद्र (2016): छत्तीसगढ़ी कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 101।
12. साहू, रामप्रसाद (2014): छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य: स्वरूप और विकास, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 174।
13. शुक्ल, रामचंद्र (1929): हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 12।
14. देवांगन, तीजनबाई (प्रदर्शन परंपरा): पंडवानी (महाभारत की लोककथा पर आधारित मौखिक परंपरा), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली।
15. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (1952): अशोक के फूल, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 45।
16. GYFYC वर्मा, हरीशचंद्र (2001): छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएँ, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृष्ठ 58।
17. सिंह, नामवर (1975): कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. देवांगन, तीजनबाई (प्रस्तुति परंपरा): पंडवानी (छत्तीसगढ़ की महाभारत-आधारित लोकगाथा), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली।
19. साहू, रामप्रसाद (2014): छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य: स्वरूप और विकास, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर।
20. मिश्र, शिवकुमार (2013): छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और साहित्य, छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर।